श्रीकृष्णचरितसुधा के
अखण्ड-पाठ हेतु सम्पुट मंत्र

सचर अचर जड़ चेतन प्रानी।
बन्दउँ कृष्नतत्व मय जानी।।
व्रजपर्व/दो०१२/चौ०१२

स्यामचरित नासक सब सूला।
सकल सदन सुख मंगल मूला।।
व्रज०/२४/०३

सुमिरत जाहि जाहिं जग बाधा।
परम प्रेम गुन मूरति राधा।।
व्रज०/२५७/१०

हरन सकल भवगत संदेहा।
स्याम चरित सब मंगल गेहा।।
व्रज०/२६/०६

जदुपति जीवन विमल तरंगा।
सेवत जाहि होहिं भ्रम भंगा।।
व्रज०/५५/१०

राधेस्याम धाम धन धी के।
पुरवहु सकल मनोरथ जी के।।
व्रज०/२७०/११

बनइ न भूप भगति जग साधे।
बिनु बृषभानुसुता अवराधे।।
व्रज०/२७०/१२

असरन सरन सबहिं दुख छोरे।
हरहु कृपानिधि संकट मोरे।।
द्वारिका०/५३/०३

हे गोबिन्द कृष्न गिरधारी।
जगन्नाथ मैं सरन तिहारी।।
द्वारिका०/०५/०७

अब मम सुगति कान्ह कर तोरे।
दीनदयाल हरहु दुख मोरे।।
द्वारिका०/०५/०८

कृपासिंधु तुम्ह सरबस मोरे।
हरहु मोर दुख बंधन छोरे।।
उद्योग०/६६/०५

मैं तव सरन सिष्य गिरधारी।
निज निदेस भ्रम भंजहु भारी।।
प्रबोध०/०८/०३

कृपासिंधु बिनवउँ कर जोरी।
पूजहु हृदय लालसा मोरी।।
प्रबोध०/६४/०८

मन कामना एक प्रभु मोरे।
पूजहि परम अनुग्रह तोरे।।
व्रज०/२०८/०८

कलि कलेस दुख दारिद नासन।
श्रीहरिचरितसुधा अनुसासन।।
शान्ति०/४६/१८

जिन्ह जदुनाथ बाँह गहि राखी।
तिन्हहिं सकल सुख संकर साखी।।
सभा०/१७६/०४